श्रीमते रामानन्दाचार्याय नमः

श्रीगुरुचरणकमलेभ्यो नमः

श्रीरामानन्द चालीसा

रचयिता :-

मानस-मर्मज्ञ

महान्त :-

पं० सच्चिदानन्ददास "रामायणी"

वर विश्राम बाग, श्रीरामग्रन्थागार

श्रीमणिपर्वत, श्रीअयोध्याजी ।

प्रकाशन स्थल—

वर विश्राम बाग, श्रीरामग्रन्थागार, मणिपर्वत

श्रीअयोध्याजी

तृतीय संस्करण— ११००

श्रीकृष्ण चैतन्य महाप्रभुके जयन्ती

फाल्गुन पूर्णिमा रविवार

श्रीरामानन्दाचार्य सं०— ७९४

वि० सं०— २०५०

ई० सं०— २७/३/१९९४

न्यौछावर— १)

मुद्रक—

श्रीराम प्रिंटिंग प्रेस, भगवदाचार्य स्मारक सदन,

श्रीअयोध्याजी ।

श्रीरामानन्द चालीसा

दोहा

जै-जै प्रभु अशरण शरण,
स्वामी रामानन्द ।
विश्ववन्द्य यतिवर चरण,
दास "सच्चिदानन्द" ॥ १ ॥
समारम्भ श्रीसीय पिय,
मध्यम रामानन्द ।
अपने श्रीआचार्य तक,
बन्दौं परमानन्द ॥ २ ॥

चौपाई

जय आचार्य प्रवर सुखसागर ।
परम कृपालु विनीत उजागर ॥ १ ॥

तीर्थ प्रयागहिं लइ अवतारा ।
अनुपम यश जग महँ विस्तारा ॥ २ ॥
पुण्यसदन द्विज पिता तुम्हारे ।
मातु सुशीला के तुम प्यारे ॥ ३ ॥
तुम त्रिभुवन गुरु वेदन गाये ।
जग शिक्षा हित गुरू बनाये ॥ ४ ॥
अधम जनों के तुम उद्धारक ।
मन्त्रराज के बने प्रचारक ॥ ५ ॥
राममन्त्र के सब अधिकारी ।
बालक वृद्ध युवा नर नारी ॥ ६ ॥
किये घोषणा शङ्ख बजायें ।
परम उदार सुनत जो आये ॥ ७ ॥

वर्णाधम यमनादिक जाती ।
भक्त बनाइ लगाये छाती ॥ ८ ॥
द्वादश शिष्य प्रधान बनाये ।
द्विज तिय शुद्र सबहिं अपनाये ॥ ९ ॥
दलि पाखंड भक्ति सुस्थापन ।
किय दिग्विजय और देशाटन ॥ १० ॥
जगह-जगह निज शिष्य पठाये ।
भक्तिप्रचारक सब जग छाये ॥ ११ ॥
दास जीव स्वामी सियकन्ता ।
श्रुतिसिद्धान्त सिखावहिं सन्ता ॥ १२ ॥
सेवा-धर्म जीव कहँ अहई ।
को पालइ जीवन फल लहई ॥ १३ ॥

यहि विधि धर्म प्रचार-प्रसारा ।
जग महँ जगह-जगह विस्तारा ॥ १४ ॥
म्लेक्षराज्य अति अत्याचारा ।
जजियादिक द्वादश निरधारा ॥ १५ ॥
हिन्दुन कर दुख सुनि यतिराजा ।
भये कुपित सह सन्त समाजा ॥ १६ ॥
लीला पूर्वक शंख बजावा ।
अति आश्चर्ज मस्जिदन छावा ॥ १७ ॥
जो अजान हित मुल्ला जावैं ।
कण्ठ खुलै नहिं बोलि न पावैं ॥ १८ ॥
हारे सब मुल्ला दर्वेशा ।
मिटे न यमनन केर कलेशा ॥ १९ ॥

तब सब मिलि यतिवर पहिंआये ।
अति आरत हो वचन सुनाये ॥ २० ॥
जजियाकर आदिक मिटवाई ।
अति आनन्द रहा जग छाई ॥ २१ ॥
एक बार श्रीअवध मंझारा ।
हिन्दुन पर अति अत्याचारा ॥ २२ ॥
म्लेक्ष-यन्त्र बहु जगह लगाई ।
सब कर सूत्र-शिखा कटवाई ॥ २३ ॥
यहि विधि हिन्दू धर्म मिटावहिं ।
बरबस मुस्लिम सबहिं बनावहिं ॥ २४ ॥
सुनि भेजे तब वैष्णव संता ।
तुर्क होंहि हिन्दू लखि मंत्रा ॥ २५ ॥

यमनयन्त्र सब तोरि बहाये ।
जय जयकार अवध महं छाये ॥ २६ ॥
मूर्तमान हो कलि इक बारा ।
श्रीआचार्य निकट पगु धारा ॥ २७ ॥
बोला राममंत्र प्रभु दीजे ।
अब मोहिं वेगि कृतारथ कीजे ॥ २८ ॥
अशरणशरण नाथ पहिं आयों ।
अब तक हौं दीक्षा नहिं पायों ॥ २९ ॥
दीक्षा दे बोले सुखदाता ।
यह दक्षिणा देहु तुम ताता ॥ ३० ॥
सच्चे साधु तोर गुरु भाई ।
उन कहें अब न सतायहु जाई ॥ ३१ ॥

कलिमहं जो साँचे हरि दासा ।
तब से नहिं पावत हैं त्रासा ॥ ३२ ॥
यहि प्रकार बीते बहुकाला ।
करत सदा सन्तन प्रतिपाला ॥ ३३ ॥
दो सौ नव अरु वर्ष पचासा ।
भूतल पर प्रभु कीन निवासा ॥ ३४ ॥
सम्वत बारह सौ छप्पन महँ ।
प्रगटि प्रयाग रहे बचपन महँ ॥ ३५ ॥
पन्द्रह सौ पन्द्रह सम्वत महँ ।
कीन गमन निज दिव्यधाम जहँ ॥ ३६ ॥
शिष्य प्रशिष्य भये बहुतेरे ।
सम्प्रदाय बाढ़ा चहुँ फेरे ॥ ३७ ॥

सेन कबीर संत रैदासा ।
मीरा तुलसी से हरिदासा ॥ ३८ ॥
"भक्तमाल" "मानस" जगपावन ।
भयो प्रसिद्ध ग्रन्थ जन भावन ॥ ३९ ॥
जय--जय रामानन्द गुसाईं ।
कृपा करहु नित रहहु सहाई ॥ ४० ॥